मंगलाचरण

सानन्द प्रणिपत्य सिद्धिसदनं लम्बोदरं भारतीं,
सूर्यादिग्रहमण्डलं निजगुरुं भक्त्या हृदब्जे स्थितम्।
येषामंघ्रिसरोरुहस्मरणता नानविधाः सिद्धयः,
सिद्धिं यान्ति लघुप्रयान्ति विलयं प्रत्यूह शैलव्रजाः।।

डिं डिं डिंकत डिम्ब डिम्ब डमरु, पाणौ सदा यस्य वै।
फुं फुं फुंकत सर्पजाल हृदयं, घं घं च घण्टा रवम् ।।
वं वं वंकत वम्ब वम्ब वहनं, कारुण्य पुण्यात् परम्।
भं भं भंकत भम्ब भम्ब नयनं, ध्यायेत् शिवं शंकरम्।।

यावत् तोय धरा धरा धर धरा, धारा धरा भूधरा।
यावत् चारू सुचारू चारू चमरं, चामीकरं चामरम्।।
यावत् रावण राम राम रमणं, रामायणे श्रुयताम्।
तावत् भोग विभोग भोगमतुलं, यो गायते नित्यसः।।

यस्याग्रे द्राट द्राट द्रुट द्रुट ममलं, टंट टंट टंटटम्।
तैलं तैलं तु तैलं खुखु खुखु खुखुमं, खंख खंख सखंखम्।।
डंस डंस डुडंस डुहि डुहि चकितं, भूपकं भूय नालम्।
ध्यायस्ते विप्रगाहे सवसति सवलः, पातु वः चंद्रचूडः।।

गात्रं भस्मसितं सितं च हसितं, हस्ते कपालं सितम्।
खट्वांग च सितं सितश्च भृषभः, कर्णेसिते कुण्डले।।
गंगाफनेसिता जटापशुपते, चन्द्रः सितो मूर्द्धनी।
सोऽयं सर्वसितो ददातु विभवं, पापक्षयं सर्वदा।।

नमस्तेऽस्तु गङ्गे त्वदंगप्रसंगात् भुजंगास्तुरंगाः कुरंगाः प्लवंगाः।
अनंगारिसंगाः सभंगाः शिवांगा भुजंगाधिपांगीकृतांगा भवन्ति।।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा, दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा, गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा।।

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत घोषणा पत्र

मैं **कमल डिमरी** घोषणा करता हूँ कि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त सामग्री मेरा मौलिक कार्य है। **डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी, (सहायक आचार्य/अध्यक्ष, वैदिक ज्योतिष विभाग, मानविकी विद्याशाखा, उ0 मु0 वि0 वि0 हल्द्वानी)** के निर्देशन में दिनाँक– 26 सितम्बर 2019 से दिनाँक– 30 जून 2025 तक के समयान्तराल की अवधि में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पूर्ण किया गया है।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध **''बालारिष्ट समीक्षा''** में मेरे द्वारा प्रयुक्त सामग्री को मैंने किसी और डिग्री/डिप्लोमा के लिए प्रयुक्त नहीं किया गया है।

मैं निष्ठा के साथ घोषणा करता हूँ कि शोध–प्रबन्ध में शोधार्थियों, लेखकों, आचार्यों, विद्वानों एवं विभिन्न अन्तर्जाल की सामग्री का उपयोग पाद टिप्पणी के साथ प्रयोग किया गया, जिसका उल्लेख सन्दर्भ सूची में भी किया गया है।

मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि मैंने जानबूझकर किसी शोध पत्रिका, पुस्तिका, रिपोर्ट, निबन्ध, वेबसाइट आदि में उपलब्ध सामग्री का उपयोग प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में अपना कार्य बताते हुए नहीं किया है।

दिनाँक : **(कमल डिमरी)**

स्थान : हल्द्वानी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open Univercity

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी

सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष

वैदिक ज्योतिष विभाग

Ref. No. uou.....

Date: .....

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के शोधछात्र **कमल डिमरी, पंजीकरण संख्या– 15076582** ने मेरे मार्गदर्शन में **''बालारिष्ट समीक्षा''** विषय पर पूर्ण श्रम के साथ शोध कार्य किया है।

परिश्रम के साथ किया गया यह इनका मौलिक शोधकार्य है, यह ज्ञानवर्द्धक एवं प्रशंसनीय है। यह शोधकार्य निश्चित रुप से शोध के क्षेत्र में नवीनता लाएगा।

मैं इस बात से सहमत हूँ कि वर्तमान शोध प्रवृत्तियों के अनुरुप संकलित इस मौलिक शोधकार्य को जाँच हेतु विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

मैं शोधछात्र के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शोध निर्देशक

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी

सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष

वैदिक ज्योतिष विभाग

Ref. No. uou.....

Date: .....

कोर्स वर्क परीक्षा/शोध पूर्व परीक्षा/सेमिनार आदि कार्य पूर्ण करने का प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के मानविकी विद्याशाखा वैदिक ज्योतिष विभाग के शोधछात्र **कमल डिमरी, पंजीकरण संख्या– 15076582** **"बालारिष्ट समीक्षा"** विषय पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहे हैं।

इन्होंने शोधकार्य के आवश्यक **कोर्स वर्क परीक्षा/शोध पूर्व परीक्षा/सेमिनार आदि** दिनाँक– 30/06/2025 से पहले सफलतापूर्वक पूर्ण कर दिये थे।

निदेशक

प्रो0 गिरिजा पाण्डेय

मानविकी विद्याशाखा विभाग

शोध निर्देशक

डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी

सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष

वैदिक ज्योतिष विभाग

दृष्टान्तो नैव दृष्टस्त्रिभुवनजठरे सद्गुरोर्ज्ञानदातुः
स्पर्शश्चेत्तत्र कलप्यः स नयति यदहो स्वह्रतामश्मसारम् ।
न स्पर्शत्वं तथापि श्रितचरगुणयुगे सद्गुरुः स्वीयशिष्ये
स्वीयं साम्यं विधते भवति निरुपमस्तेवालौकिकोऽपि।।

सर्व प्रथम मैं अकारणकरुणावरुणालय अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर जगत्पालनकर्ता अपने कुलदेव श्री बद्रीनारायण, आशुतोष भगवान शशांकशेखर श्री केदारेश्वर एवं माँ त्रिपुर सुन्दरी पराम्बा जगदम्बा जो कि अपार मेधा शक्ति की अधिष्ठाता हैं[1] एवं समस्त विद्याएँ जिनका की स्वरुप हैं[2] के पतित पावन चरणारविन्द में अपनी श्रद्धा–सुमनांजलि अर्पित करता हूँ।

जिन्होंने मुझे जन्म दिया एवं मेरे लालन–पालन एवं शिक्षा को पूर्ण करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया है, ऐसे अपने माता–पिता **श्रीमती उर्मिला देवी** एवं **श्री बलीराम डिमरी** जी के चरणकमलों की साष्टांग वन्दना करता हूँ। साथ ही वेद–यज्ञों एवं ज्योतिष ज्ञान भण्डार अपने पितामह गौलोक वासी **श्री कलीराम डिमरी** जी को स्मरण करते हुए उनको भी अपनी श्रद्धा–कुसुमांजलि अर्पित करता हूँ। क्योंकि ज्योतिष संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान मुझे बाल्यकाल में प्रदान करते मेरे अन्तर्मन में ज्योतिष ज्ञान के प्रति उत्कण्ठा को जागृत किया था।

शास्त्रों में कहा गया है कि– जिनके स्मरणमात्र से चित्त में ज्ञान–विज्ञान स्वयं प्रकट हो जाता है ऐसे गुरु सर्वसम्पतिरूप होते हैं।[3] अतः मैं हृदय की गहराईयों से ज्ञान–विज्ञान में अद्वितीय विद्वान, त्रिस्कन्ध ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ, अत्यन्त सरल एवं सुमधुर व्यक्तित्व के धनी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के वैदिक ज्योतिष विभाग के आचार्य **डॉ0 नन्दन कुमार तिवारी** जी के चरणों में अपनी प्रणमांजलि अर्पित करते हुए परम आभार प्रकट करता हूँ, जिनके परम स्नेह एवं कुशल मार्गदर्शन में **''बालारिष्ट समीक्षा''** जैसे दुरुह विषय पर निर्विघ्नता पूर्वक यह शोधकार्य सम्पन्न किया गया है।

---

[1] दुर्गासप्तशती,चतुर्थ अध्याय, श्लोक सं0 11
[2] दुर्गासप्तशती, एकादश अध्याय, श्लोक सं0 6
[3] गुरुगीता, प्रथम अध्याय, श्लोक सं0 38

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति, कुलसचिव, शोध निदेशक, मानविकी विद्याशाखा विभाग की निदेशक महोदया जी का एवं उन सभी आचार्य एवं कर्मचारियों के प्रति हृदय की गहराईयों से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस शोध कार्य की समयावधि में मुझे विभिन्न प्रकार से सहायता प्रदान की।

उत्तराखण्ड संस्कृत शिक्षा विभाग के सचिव परमादरणीय **श्री दीपक कुमार गैरोला जी** को भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिनके सहयोग से विभिन्न ज्योतिष के विद्वानों का मार्गदर्श प्राप्त हुआ एवं अनेक राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, शोध संगोष्ठीयों में प्रतिभाग एवं व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हुए।

ज्योतिष जगत के भास्कर एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में जोतिष के मूर्धन्य विद्वान श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के आचार्य एवं उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति **प्रो0 देवीप्रसाद त्रिपाठी** जी के चरणो की सादर वन्दना करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने शोधकार्य के आरम्भ से ही मुझे अहर्निश मार्गदर्शन प्रदान किया तथा पुत्रवत् स्नेह करते हुए अनेकों प्रकार की सहायता प्रदान की।

इसी क्रम में मैं परम विद्वान, अत्यन्त सौम्य मूर्ति श्री लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के **आचार्य डॉ0 रतन लाल शर्मा** जी को सादर अभिवादन कर विशेष धन्यवाद अर्पित करते हुए कृतज्ञता निवेदित करता हूँ जिन्होंने समय–असमय मुझे विभिन्न माध्यमों से मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन प्रदान किया।

वेद–शास्त्रों के उद्भट विद्वान, ज्योतिष शास्त्र के मर्मज्ञ एवं परम साधक **स्वामी शान्ति धर्मानन्द**, शान्तिकुटीर, ऋषिकेश को श्रद्धा पूर्वक नमन करते हुए आभार प्रकट करता हूँ, उन्होंने ज्योतिष, वेद–पुराणों, कोष एवं अन्य ग्रन्थों में सन्निहित अरिष्ट के सन्दर्भों पर निरन्तर मार्गदर्शन प्रदान किया एवं व्याकरण शास्त्र के गूढ़ तत्वों को सुगमता से समझाते हुए व्याकरण की दृष्टि से अरिष्ट को परिभाषित किया।

श्री दर्शन महाविद्यालय के प्रधानाचार्य **डॉ0 राधामोहनदास,** आचार्य **डॉ0 सुशील कुमार नौटियाल, डॉ0 शान्ति प्रसाद मैठाणी, श्री आशीष जुयाल, श्री सन्दीप कुकरेती, श्री मुकेश बहुगुणा**

जी को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने टंकण, संसोधन कार्य आदि के रुप में अपना सहयोग समय–समय पर प्रदान किया।

हेमवती नन्दन विश्वविद्यालय के आचार्य **डॉ0 प्रभाकर बड़ोनी**, जी **श्री पवन बिष्ट** जी सहित सभी उन आचार्यों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने अहर्निश मुझे अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

अपनी सहधर्मिणी **श्रीमती शिखा** को भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने गर्भावस्था में होने बावजूद भी इस शोध कार्य में शोध सामग्री एकत्र करने, लेखन कार्य, लिखित शोधकार्य का टंकण करने आदि अनेक कार्यों में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। इसके साथ ही अपने पुत्र **श्रीवर्द्धन डिमरी, भगिनियां कुसमा, सुषमा** एवं **चन्द्रकला** को भी अपना सस्नेह धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

''सीय राम मय सब जग जानी, करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानि'' की भावना के साथ उन समस्त व्यक्तियों, दिव्य आत्माओं को भी सादर धन्यवाद अर्पित करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्षाप्रत्यक्ष रुप में इस शोध कार्य में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया।